राधास्वामी मत (दयालबाग़) के पवित्र पद्य साहित्य में निहित सांगीतिक तत्व - एक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा, संगीत-विषय में पीएच. डी. की
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की
रूपरेखा

शोधकर्त्री

महिमा सिन्हा

शोध- निर्देशिका

डॉ. नीतू गुप्ता

संगीत विभाग (सितार)

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़ आगरा – 282003

2023

भूमिका-

> **"ब्रह्मप्रणवसंधान नादो ज्योतिर्मयः शिवः स्वयमाविर्भवेदात्मा मेधापायेंऽशुमानिव सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां संधाए वैष्णवीम् शृणुयाद्दक्षिणे कर्ने नादमन्तर्गतं सदा अभ्यस्यमानो नादोऽयम बाह्यमावृणुते ध्वनिम् पक्षाद्विपक्षखिलं जित्वा तुर्यपदं व्रजेत् ।"**
>
> - नादबिंदूपनिषद् ३०/३१/३२

> **वत्स ! आत्मा और ब्रह्म की एकता का जब चिंतन करते हैं तब कल्याणकारी ज्योतिस्वरूप परमात्मा का नाद-रूप में साक्षात्कार होता है। यह संगीत ध्वनि बहुत मधुर होती है। योगी को सिद्धासन में बैठकर वैष्णवी मुद्रा धारण कर अनाहत ध्वनि को सुनना चाहिए। इस अभ्यास से बाहरी कोलाहल शून्य होकर अंतरंग तूर्य पद प्राप्त होता है।" [1]**

भारतीय संस्कृति में प्रारम्भ से संगीत व धर्म का अटूट सम्बन्ध रहा है। यहाँ संगीत न केवल बाह्य अर्चना प्रक्रिया का भाग है तथापि स्वयं ईश्वर को नाद रूप कहा गया है तथा नाद-साधना, ईश्वर की साधना एक समान मानी गयी है।

प्राचीन किंवदंतियों व ग्रंथों में नाद-योगियों के अनेकानेक दृष्टांन्त प्राप्त होते हैं जो नाद - साधना से ब्रह्म के साक्षात्कार की कामना करते थे। 'नादबिनंदोपनिषद' का उत्तराङ्कित अंश इसी का उदाहरण है। प्रसिद्द ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने भी संगीत को सर्वश्रेष्ठ कला माना है, क्योंकि उसमें ईश्वर की अनुभूति कराने की व आदि सत्य का अनुकरण करने की सर्वाधिक शक्ति विद्यमान है।

विविध धर्मों में संगीत -

भारतवर्ष की संस्कृति में अंकुरित पल्लवित सभी धर्मों में संगीत का भिन्न-भिन्न किन्तु शिरोधार्य स्थान रहा है। वैदिक धर्म में यजन व कर्मकाण्डों हेतु त्रिस्वरों में मंत्रोचार होता था। चतुर्वेद में से एक सम्पूर्ण वेद ही श्लोकों के सांगीतिक पाठन पर आधारित हुआ तथा संयोग मात्र नहीं कि श्री कृष्ण ने गीता में स्वयं की उसी वेद से तुलना की।

"वेदानां सामवेदोऽस्मि।"

कालांतर में उदित बौद्ध धर्म के मंदिरों, मठों में मन्द्र स्वरों में गायन-अर्चन, घंटे-घड़ियालों का घोष एवं ॐ शब्द का उच्चार संगीत के प्रमुख प्रयोग हुए। साथ ही बौद्ध धर्म के दर्शन में भी संगीत का विवरण प्राप्त है - बौद्ध धर्म के

महायान सम्प्रदाय की एक शाखा *Pure Land Buddhism* में ईश्वर के लोक को पूर्णतः संगीतमय बताया है।

“In Pure Land Buddhism, though Buddhist paradises are represented as profoundly musical places in which Buddhist law takes the form of gorgeous melodies.”[3]

आठवीं शताब्दी में मुहम्मद बिन क़ासिम के सिंध फतह से सूफी मतधारा का भारत में प्रभाव प्रारम्भ हुआ, जो दिल्ली पर मुग़ल शासन काल में अधिकाधिक प्रभाव से प्रतिष्ठित हुआ। सूफ़ी मत में संगीत प्रार्थना एवं ईश्वर से तादात्म्य स्थापित करने के साधन के रूप में प्रयोग होता है। अनेक संगीत शैलियाँ जैसे- कव्वाली, समाँ, ग़ज़ल, हम्द, नात, क़लबाना, चादर सूफ़ी-मत से ही निःसृत हैं।

“music is … a path to further spiritual development and a medium through which the human soul may approach the Divine.” [2]

“Whether it's singing, listening or whirling, Sufi music reaches the soul of the mystic Muslim and awakens the soul's consciousness.” [2]

पंद्रहवीं शताब्दी में श्री गुरु नानक देव के प्रकट होने से सिख धर्म का शुभारम्भ हुआ। सिख धर्म में सभी शबदों का पाठ शास्त्रीय संगीत की रीति से गाने की परम्परा है। सामान्यतः प्रचलित रागों के अतिरिक्त इनके अपने राग और तालें भी हैं। गायन के संग तबला, तानपुरा, स्वरपेटी (हारमोनियम), मंजीरा व करताल वाद्यों का प्रयोग शोभायमान रहता है।

यहाँ अवलोकन किया कि वेदों, उपनिषदों, जैन धर्म के धर्म शास्त्रों में, पवित्र ग्रंथों में संगीत एवं आध्यात्म की प्रगाढ़ अन्योन्याश्रयता एवं अंततोगत्वा एकरूपता के प्रमाण और उदाहरण प्राप्त होते हैं। वहीँ दूसरी ओर भारतीय संगीत की यह भी अनूठी विशेषता है कि संगीत के शुद्ध शास्त्रीय व प्रायोगिक रूपों में संगीत के दैवीय गुणों का वर्णन है, चर्चा है, यहाँ तक कि प्रमाण भी हैं। यह विशेषता विश्व के किसी भी संगीत वाङ्गमय में नहीं देखने को मिलती।

“धर्मार्थिकाम मोक्षणामिदमेवेक साधनम्।
नाद विद्या परांलब्धवा सरस्वतयाः प्रसादतः।” [3]

(प्रस्तुत श्लोक में चतुरपुरुषार्थों की सफलता का साधन संगीत माना गया है व संगीत की सिद्धि, मात्र दैवीय

कृपा से होती हैं ऐसा स्वीकार किया गया है)

“सुस्वर वर्ण विशेष रूपं रागस्य बोधकं द्वेधा।
नादात्मकं च वेदमयं तत्क्रमतो नेक्रमेकंतु।।” [4]

(प्रस्तुत श्लोक में रागों के स्वर रूप के साथ-साथ उनके उनके देवरूप को भी स्वीकारा है।)

आदि।

संगीत साधना से दैवीय अनुभूतियों व चमत्कारों के होने की कथाएँ अनेकानेक हैं। वर्तमान में भी रागों में चिकित्सात्मक, आत्मकेंद्रण तथा मानसिक स्थिरता की शक्तियाँ अनुभव की जाती हैं। जो भारतीय संगीत के आध्यात्मिक तादात्म्य का प्रतीक है।

तथापि आध्यात्म और संगीत के क्षेत्र में अनवरत शोध कार्य हो रहे हैं जो विविध धर्मों में संगीत की विशिष्टताएँ, भूमिकाएँ, संगीत के परिष्कार में धर्म का योगदान, धार्मिक संगीत के मानव मन पर प्रभाव आदि विषयों को प्रकाश में लाते हैं।

इसी श्रृंखला में यह शोध कार्य प्रस्तावित किया जाता है जो संत मत की वर्तमान की सर्वप्रमुख शाखा 'राधास्वामी मत' का सांगीतिक दृष्टि से अध्ययन करने पर केंद्रित है।

राधास्वामी मत (संत मत) -

संत मत के अनुसार ‘संत’ कोई सामान्य अर्थ में प्रयुक्त शब्द नहीं, अपितु अति विशिष्ट आध्यात्मिक पदवी है। संत मत के अनुसार संत वह महापुरुष हैं जो कुल रचना के चौथे शाश्वत देश [7] सत्तलोक से आकर भूमण्डल पर मात्र जीवों के कल्याण के निमित्त अवतार धारण करते हैं तथा उन्हीं परम संत के द्वारा प्रतिपादित मत‘ संत मत’, राधास्वामी मत है।[8]

राधास्वामी मत के प्रथम आचार्य परम पुरुष पूरन धनी हुज़ूर स्वामी जी महाराज कृत पवित्र पोथी सारबचन नसर में गत ७०० वर्षों में प्रगटे सच्चे साध, संत व फ़क़ीरों के नाम इस प्रकार उल्लिखित हैं - **"कबीर साहब, तुलसी साहब, जगजीवन साहब, गरीबदासजी, पलटू साहब, गुरु नानक, दादू साहब, तुलसीदास जी, नाभा जी, स्वामी हरिदास, सूरदास जी और रैदास जी और मुसलमानो में शम्स तबरेज़, मौलवी रूम, हाफ़िज़ सरमद, मुजाहिद**

अलफ़सानी।" [5] उक्त कथन का अवलोकन करने से संत मत की विविध धाराएँ स्पष्ट हो जाती हैं।

तथ्यात्मक दृष्टि से राधास्वामी मत की स्थापना इस मत के प्रथम आचार्य परम पुरुष पूरन धनी स्वामी जी महाराज के द्वारा हुई थी। आपका जन्म 24 अगस्त सन् 1818 को पन्नी गली, आगरा में हुआ था। आपका निवास अधिकांशतः पन्नी गली आगरा रहा। आपने 15 फ़रवरी सन् 1861 को बसंत पंचमी के पावन दिवस पर सत्संग को सर्वसाधारण के लिए जारी फ़रमाया ।

इस मत में वर्तमान संत सतगुरु का सर्वाधिक महत्व है, जो वंशानुक्रम से नहीं अपितु एक्लमेशन की प्रक्रिया द्वारा प्रकट होते हैं। इस मत में सुरत- शब्द अभ्यास का उपदेश दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सत्संग, सेवा, सुमिरन, ध्यान, भजन, गुरु-भक्ति, इसके आधार स्तम्भ हैं। वर्तमान में राधास्वमी सत्संग दयालबाग़ के अतिरिक्त इसके अन्य फिरके भी हैं यथा- व्यास सत्संग, पीपलमंडी सत्संग, तरनतारन सत्संग, रूहानी सत्संग, स्वामीबाग आदि ; जिनमें दयालबाग़ सत्संग का एक विशेष स्थान है। वर्तमान में दयालबाग़ में परम गुरु प्रो. प्रेम सरन सत्संगी साहब आठवें संत सतगुरु हैं।

राधास्वामी मत में संगीत -

राधास्वामी मत जो कि संत मत का ही वर्तमान रूप है संतों के महान दर्शन से आप्लावित साहित्य एवं जीवनशैली से समृद्ध है।

अथ प्रेमसूत्रं व्याख्यास्यामः। सच्चिदानंदस्वरूपं चैतन्यम्।

-परम गुरु हुज़ूर महाराज

परम सत् चित् प्रेमानंद प्रकाश शब्द अनहद नाद स्वरूपम्।
राधास्वामी ध्वन्यात्मक शब्द धुन आदि अनादि चैतन्यम् ।
राधास्वामी सर्वकारणम् अति विख्यातं मूलपरमतत्वं भजे।

- परम गुरु हुज़ूर सत्संगी साहब [6]

उक्त रचना परम संत परम गुरु महाराज साहब एवं परम गुरु हुज़ूर सत्संगी साहब कृत है जिसमें ईश्वर के प्रेम-स्वरुप की व्याख्या की गयी है। इसमें परमेश्वर के गुणों में उनको स्पष्टतः अनहद नाद स्वरुप बतलाया है व (नादात्मक)

राधास्वामी नाम को भजने का सन्देश दिया है। इसी के समान पग-पग पर राधास्वामी मत की संस्कृति, दर्शन, पद्यतियाँ, इतिहास और साहित्य सार्थक व उद्देश्यपूर्ण संगीत से रञ्जित हैं ।

संतों की बानियों में विविध वाद्य यंत्रों के नाम, विविध गायन शैलियों का प्रयोग राग-रागिनियों के नाम, नृत्य संगीत का पुट आदि मिलते हैं।

"मुरलिया बाज रही।
कोई सुने संत धर कान।" [9]
"राग और रागिनी मैंने सुने अंतर जाकर।" [10]
"ठुमरी अब करी है बखानी।
सुरत चली ठुम-ठुम अगवानी।" [11]

सभी पवित्र शब्द पाठों के रचनाकार होने के अतिरिक्त उनके गायन की अनेक सांगीतिक धुनें भी स्वयं संत सत्गुरुओं की रचनाएँ हैं अतैव स्पष्टतः उन धुनों में भाव-ग्राह्यता और स्वर-माधुर्य अनुपम है।

संत मत में संगीत, मात्र संगीत के हेतु प्रयुक्त नहीं है किन्तु उसके गर्भ में सूक्ष्म व गूढ दार्शनिक अर्थ हैं, मानव चेतना और मन पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव हैं, भक्त के निर्मल भाव हैं और जीवन के महानतम उद्देश्यों की ओर आह्वान है ।

इसी दृष्टि से, राधास्वामी मत (जो कि संत मत की वर्तमान में सर्वाधिक प्रसिद्द और जीवंत शाखा है) की संस्कृति व संगीत पर विविध दृष्टिकोणों से शोध-मनन करना अपार संभावना का क्षेत्र है एवं शोधकर्त्री के सौभाग्य से अभी तक इस पर सांगीतिक दृष्टि से विस्तृत शोध नहीं हुआ है।

इसी हेतु शोधकर्त्री ने इस क्षेत्र पर शोध कार्य करने की उत्कंठा प्रस्तुत की है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण -

- विविध धर्मो के संगीत पर अलग-अलग दृष्टिकोणों से सतत शोध कार्य होते रहते हैं। कुछ विश्वविद्यालयों में धार्मिक संगीत पर एकाग्र अध्ययन करने हेतु उसके अलग विभाग भी बने हैं , जैसे 1. येल इंस्टिट्यूट ऑफ़ सेक्रेड म्यूजिक, येल यूनिवर्सिटी, न्यू हेवन, यू. एस.

- डिपार्टमेंट ऑफ़ सेक्रेड म्यूजिक एंड कम्युनिकेशन, केरल, इंडिया
- डिपार्टमेंट ऑफ़ म्यूजिक, कैथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ़ अमेरिका

आदि। इन सभी उपर्युक्त संस्थाओं में मुख्यतः चर्च संगीत पर शोध व प्रशिक्षण होता है।

वर्तमान में लगभग सभी प्राचीन धर्मों के संगीत पर महत्वपूर्ण शोध कार्य हो चुके हैं। साथ ही विविध धर्म ग्रंथों पर भी शोध कार्य होते आ रहे हैं । हाथरस से प्रकाशित 'संगीत' पत्रिका के 'गुरमति संगीत' अंक - जनवरी- फरवरी 1997 में सिख धर्म एवं ग्रन्थ पर उत्कृष्ट शोध कार्य प्रकाशित हैं। ये विषय कुछ यहाँ उल्लिखित किये जाते हैं-

- 'श्री गुरु ग्रन्थ साहब का संगीत में महत्व' - डॉ. गुरनाम सिंह
- 'गुरमत संगीत का ऐतिहासिक विकास' - डॉ. दर्शन सिंह नरूला
- 'गुरमत संगीत के विकास में गुरु साहिबान एवं संत भक्तों का योगदान' - डॉ. गुरनाम सिंह व डॉ. हरजस कौर
- 'गुरमत संगीत शास्त्र एवं व्यवहार' - डॉ. गुरनाम सिंह
- 'गुरमत संगीत में प्रयुक्त शास्त्रीय वाद्य'- डॉ. मोनिका मेहरा
- 'गुरमत संगीत की कीर्तन टकसालें' - डॉ. डी. एस. नरूला
- 'गुरमत संगीत में राग गौड़ी :एक परिचय' - प्रो. श्रीमति इंदरप्रीत कौर

इत्यादि।

इसी प्रकार अन्य लगभग सभी वर्तमान प्रचलित धर्म परम्पराओं में संगीत पर बहुधा शोध कार्य हो चुके है और आज भी हो रहे हैं। निम्नांकित कुछ उदाहरण लिखे जाते हैं।

"Buddhism and the Musical Cultures of Asia: A Critical Literature Survey." *The World of Music*, vol. 44, no. 2, 2002, pp. 135–75, http://www.jstor.org/stable/41699430.)

The Sacred Music of Islam : Sama in Persian Sufi Tradition (Leonard Lewisohn *British Journal of Ethnomusicology* Vol.-6 ,1997 Issue -1 https://www.tandfonline.com/journals/remf19)

इसी क्रम में संगीत का धर्म में प्रभाव व धर्म का समकालीन संगीत पर प्रभाव इन दोंनो पक्षों से होते शोध

कार्यों की सतत धारा देखी जा सकती है। संतोष कुमार पदारथ के शोध पत्र जो कि 'A Reflection on the Aesthetics of Indian Music, With Special Reference to Hindustani Raga-Sangita' (*SAGE open,* November 1, 2016 https://doi.org/10.1177%2F2158244016674512) शीर्षक से है , में राग-संगीत के आध्यात्मिक व अलौकिक आनंद से जुड़े तत्वों का विश्लेषण मनन किया गया है।

- Selena Thelamann की पुस्तक 'The Sound of the sacred: Religious Music in India' (पुस्तक) (1998)
- 'The man of my heart : Reflections on Religious Content and Musical Structures in Baul Songs of Bengal' पुस्तक में बंगाल के परम्परागत बाउल संगीत में धार्मिक तत्वों का विश्लेषण किया गया है।
- 'Worship Music and Devotional poetry in Vaishnava Temples of Vraj' पुस्तक में ब्रज में प्रचलित वैष्णव सम्प्रदाय के भक्तिमय संगीत को सामने रखा गया है ।

इसी के साथ धर्म से जुड़ी अध्ययन की अन्य धाराओं जैसे दर्शन, मानव मनोविज्ञान और नैतिक मूल्य आदि के संगीत के साथ सम्बन्ध पर भी शोध कार्य होते रहे हैं। जैसे -

- Wayne D. Bowman की पुस्तक Philosophical perspectives on Music,
- Theodor W. Adorno की पुस्तक Beethoven: The Philosophy of Music ,
- Roger Scruton की पुस्तक Understanding Music : Philosophy and Interpretation में विविध संगीत शैलियों और विविध संगीतज्ञों के संगीत में दार्शनिक पहलुओं पर अध्ययन किया गया है।
- Music As a Sacred Cue? Effects of Religious Music on Moral Behavior ((Martin lang et. al. , Front. Psychol., 07 June 2016 , https://doi.org/10.3389/fpsyg.2016.00814) इस शोध में धार्मिक संगीत के नियमित सुनने से व्यवहार में नैतिकता पर प्रभाव का प्रायोगिक अध्ययन हुआ है। अतः धर्म, आध्यात्म, दर्शन, नैतिकता , व्यवहार, मानवीय चेतनता आदि क्षेत्रों पर संगीत के प्रकाश में अनवरत शोध कार्य होता आ रहा है।

अस्तु हमने देखा कि धार्मिक संगीत के विविध पहलुओं पर शोधकर्ता अध्ययनरत हैं। किन्तु संत मत की वर्तमान में सर्वाधिक सक्रिय शाखा 'राधास्वामी मत' है। इस मत की शिक्षाएँ एवं संस्कृति संगीत से आप्लवित हैं। तथा

सांगीतिक दृष्टि से मत के पवित्र साहित्य का अध्ययन अल्प ही किया गया है। पूर्व लधु शोध में मेरे द्वारा इसी क्षेत्र में कार्य किया गया था, जिसमें संतों की शब्द रचनाओं में निहित गायन की विधाओं का अध्ययन विश्लेषण किया गया था व जिसके अति सफल परिणाम प्राप्त हुए थे। विषय था- 'राधास्वामी सत्संग दयालबाग़ की चयनित पद्यात्मक पोथियों के शब्द- पाठों में प्रयुक्त विविध सांगीतिक विधाओं का भावात्मक व आध्यात्मिक विश्लेषणात्मक अध्ययन' (2019), महिमा सिन्हा, एम्. ए. लघु-शोध कार्य, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टिट्यूट आगरा।

अतः इसी शृंखला में आगे कार्य करने हेतु यह शोध प्रस्ताव बनाया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता -

कला और चेतना, संगीत और चेतना एवं धार्मिक संगीत और चेतना, इनका सम्बन्ध अत्यन्त प्राचीन एवं प्रमाणित है। आध्यात्मिक संगीत किसी ना किसी स्तर पर मनुष्य के मनोभावों और वृत्तियों को को प्रभावित करता है। किसी धर्म की शिक्षाएँ और सिद्धांत उसके साहित्य तथा संगीत में परिलक्षित होते हैं। धर्म के रूप में परिवर्तन उसके साहित्य-संगीत में परिवर्तन लाता है। इन्हीं सब तथ्यों के जानने के लिए हिन्दू, जैन, ईसाई, बौद्ध आदि धर्मों के संगीत पर अनेक शोध-कार्य हुए हैं। संत-मत की शाखाओं जैसे कबीर पंथ, संत तुलसी साहब का साहित्य आदि पर भी सांगीतिक दृष्टि से शोधकार्य हुए हैं एवं हो रहे हैं। इसी शृंखला में संत मत, राधास्वामी मत का साहित्य एवं संस्कृति जो संगीत से अत्यंत समृद्ध एवं आप्लावित है, पर शोध - कार्य का विस्तृत क्षितिज विद्यमान है।

प्रस्तुत शोध में राधास्वामी मत के परम पूज्य संत-सत्गुरुओं द्वारा रचित साहित्य में विद्यमान सांगीतिक तत्वों, उस साहित्य के प्रस्तुतिकरण हेतु मत में प्रयुक्त संगीत तथा धर्म के इतिहास का सांगीतिक दृष्टि से अध्ययन और संरक्षण किया जाएगा। साथ ही अनेक ऐसी परम्परागत धुनें होती हैं जिनका यदि समय रहते संरक्षण न किया जाए तो उनका स्वरुप नष्ट अथवा परिवर्तित होता जाता है। राधास्वामी मत में शब्द पाठों की अनेक परम्परागत धुनें तो स्वयं संतों की रचनाएँ हैं। अतः इस क्षेत्र पर प्रस्तुत शोध में कार्य किया जाएगा।

अतः अध्ययन की आवश्यकता की दृष्टि से यह शोध की एक संभावना से आप्लावित व शोध की एक दुर्लभ

शाखा है।

विषय कथन -

राधास्वामी मत (दयालबाग़) के पवित्र पद्य साहित्य में निहित सांगीतिक तत्व - एक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य -

- राधास्वामी मत (दयालबाग़) के संगीत का ऐतिहासिक दृष्टि से व्यवस्थित अध्ययन करना।
- राधास्वामी मत (दयालबाग़) के संगीत में अन्तर्निहित दार्शनिक तत्वों का अध्ययन करना।
- राधास्वामी मत (दयालबाग़) के संतों द्वारा रचित पवित्र पद्य साहित्य में विविध सांगीतिक तत्वों का अध्ययन करना।
- राधास्वामी मत (दयालबाग़) के शब्द पाठों की परम्परागत धुनों के संगीत सौंदर्य का संक्षिप्त अध्ययन करना।
- राधास्वामी मत (दयालबाग़) के पवित्र पद्य साहित्य की परम्परागत धुनों का संकलन करना।

विषय का परिसीमांकन -

समय व कार्य की सीमा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध -कार्य राधास्वामी मत के परम पूज्य संत-सत्गुरुओं द्वारा रचित साहित्य में विद्यमान सांगीतिक तत्वों, उस साहित्य के प्रस्तुतिकरण हेतु मत में प्रयुक्त संगीत के ऐतिहासिक और दार्शनिक अध्ययन करने एवं मत की परम्परागत धुनों के संरक्षण तक सीमित रहेगा।

अध्ययन की विधि -

विवरणात्मक / वर्णनात्मक अनुसन्धान, गुणात्मक अनुसंधान, ऐतिहासिक अनुसन्धान।

अध्ययन के स्त्रोत-

- राधास्वामी मत (दयालबाग़) के संतों द्वारा रचित पवित्र पोथियाँ।
- राधास्वामी सत्संग सभा के आधिकारिक प्रकाशन से प्रकाशित अन्य पुस्तकें व साप्ताहिकी।

- संत मत, राधास्वामी मत और धार्मिक संगीत पर लिखे शोध पत्र तथा पुस्तकें।
- पन्नी गली, पीपल-मंडी, मुरार, बनारस आदि पवित्र स्थानों (जहाँ पूर्व में इस मत का सत्संग होता आया है) से साक्षात्कार आदि द्वारा सूत्रों-तथ्यों का संकलन ।
- राधास्वामी मत के पुराने सत्संगियों, मुख्य- पाठियों से चर्चा, साक्षात्कार।

अध्यायों का विभाजन / शोध- ग्रन्थ की प्रस्तावित रूप-रेखा -

प्रथम अध्याय- संत मत व राधास्वामी मत का परिचयात्मक अध्ययन

द्वितीय अध्याय - राधास्वामी सत्संग दयालबाग़ के संत सतगुरुओं का जीवन-परिचय और उनके द्वारा रचित साहित्य

तृतीय अध्याय- राधास्वामी मत (दयालबाग़) के संगीत की ऐतिहासिक व दार्शनिक पृष्ठभूमि

चतुर्थ अध्याय - राधास्वामी सत्संग (दयालबाग़) के संत सतगुरुओं द्वारा रचित पवित्र साहित्य में गायन, वादन व नृत्य संगीत के तत्व

पंचम अध्याय - राधास्वामी मत (दयालबाग़) के पवित्र पद्य साहित्य की परम्परागत धुनों का संकलन

उपसंहार

शोध का महत्व -

प्रस्तुत शोध का विविध प्रकार से अति महत्व हैं। राधास्वामी मत लगभग २०० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था, इस दृष्टि से यह एक अर्वाचीन धार्मिक मत धारा है। गत वर्षों में इसका अत्यंत तीव्र गति से विकास हुआ है। न केवल धर्म में अनेक अनुयायी परिवर्धित हुए हैं बल्कि इस धर्म के दर्शन व संस्कृति का व्यास इतना विस्तीर्ण है कि आज सत्संग की अपनी एक अनूठी सम्पूर्ण जीवन शैली, कार्य शैली और विचार शैली है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीड़ विकास और जीवन की सार्थकता पर बल दिया जाता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से सर्वप्रथम ऐसी दुर्लभ संस्कृति के विविध पहलू प्रकाशित होंगे और उसके अनुकरणीय तत्व बुद्धिजीवियों के संज्ञान में आएंगे।

दूसरी ओर राधास्वामी मत की जीवन शैली दुर्लभ सांस्कृतिक तत्वों से सुसिक्त है। प्रारम्भ से आज तक, सत्संग

में निरंतर सांस्कृतिक प्रगति-परिवर्तन होते आ रहे हैं जिसके सांगीतिक तत्वों का व्यवस्थित संकलन इस शोध में किया जाएगा। शब्द पाठों की रचना विविध गायन शैलियों में की गयी है, जो उन शैलियों में अनुपम दार्शनिक सौंदर्य जोड़ती हैं। परम गुरु हुज़ूर साहब जी महाराज कृत चार विस्तृत नाटकों में भाँति-भाँति के गीत- ग़ज़लें आदि का सुन्दर संकलन है जो विविध विषयों पर रचित हैं। शब्द पाठों की परंपरागत धुनों का संकलन करने से भविष्य में उनके सही प्रारूप नष्ट होने का भय नहीं रहेगा, साथ ही इन धुनों में से अनेक धुनों का सृजन स्वयं संत सत्गुरुओं के द्वारा किया गया है, अतएव उनका संकलन और अध्ययन अनेकानेक दृष्टिकोणों से लाभप्रद और आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध से राधास्वामी मत के साहित्य और संस्कृति के सांगीतिक तत्वों का सुस्पष्ट अध्ययन हो सकेगा और धार्मिक प्रायोगिक संगीत से सम्बंधित अनेक नवीन तथ्य सामने आएंगे।

संत साहित्य में प्रयुक्त सांगीतिक तत्वों के पार्श्व में आध्यात्मिक अर्थ निहित होते हैं। सांगीतिक तत्वों में सन्निहित इन गूढ़ अर्थों की पहचान से राधास्वामी मत के संगीत की विविध मौलिकताओं का ज्ञान होगा।

अतएव प्रस्तुत शोध धार्मिक संगीत, और संत मत की संगीत परम्पराओं के दृष्टिकोण से अध्ययन की एक बहुमूल्य आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1. पृष्ठ - 54, शब्द ब्रह्म - नाद ब्रह्म https://ia800802.us.archive.org/ 13/items/ShabdBrahmNaad Brahm1/Shabd_Brahm-Naad_Brahm%20%281%29.pdf
2. http://www.mideastweb.org/culture/sufi_music.htm
3. दामोदर पंडित , संगीत दर्पण , अ - 1 , श्लोक - 21 'भारतीय परम्परा में आध्यात्म और संगीत', डॉ रेखा रानी, IJRAR, जनवरी 2018, Volume- 5, Issue- 1
4. राग विबोध , पंचम विभाग, सोमनाथ, 'भारतीय परम्परा में आध्यात्म और संगीत', डॉ रेखा रानी, IJRAR, जनवरी 2018, Volume- 5, Issue- 1
5. सारबचन नसर, पृष्ठ-33, 34

6. The Dayalbagh Herald (weekly), October 20, 2020, Dayalbagh press and Publications (P) , Ltd.

7. Discourrses on Radhasoami Faith, Supplement to Discourses on Radhasoami Faith , adjoining diagram.(Diagram and a rudimentary model of Spiritual framework)

8. पृष्ठ- 4, सारबचन नज़्म

9. पृष्ठ - 726, सारबचन (नज़्म)

10. पृष्ठ - 424, सारबचन (नज़्म)

11. पृष्ठ - 884, सारबचन (नज़्म)

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	रचनाकार का नाम	प्रकाशन एवं वर्ष
1	सारबचन (नज़्म)	श्री शिव दयाल सिंह (परम पुरुष पूरन धनी स्वामी जी महाराज)	राधास्वामी सत्संग सभा दयालबाग़, आगरा (1998)
2	सारबचन (नसर)	श्री शिव दयाल सिंह (परम पुरुष पूरन धनी स्वामी जी महाराज)	राधास्वामी सत्संग सभा दयालबाग़, आगरा (1998)
3	यथार्थ प्रकाश	श्री आनंद स्वरुप (परम गुरु हुज़ूर साहब जी महाराज)	राधास्वामी सत्संग सभा दयालबाग़, आगरा (2007)
4	Sound and Communication	Wilke, Annette; Moebus, Oliver	Walter de Gruyter GmbH & Co. KG, Berlin/New York (2011)
5	शब्द ब्रह्म नाद ब्रह्म	श्रीराम शर्मा आचार्य	युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि, मथुरा (2011)
6	Music: It's form function and value	Swami Prajnannanda	Munshiram Manoharlal Pvt. Ltd. ,54 Rani Jhansi Road , New Deelhi- 110055 (1997)
7	चेतना के त्रिविध आयाम	प्रो. अगम कुलश्रेष्ठ	के एल चौधरी प्रकाशन ८ / डी ब्लॉक , एक्स इंद्रपुरी , लोनी , गाज़ियाबाद - 201102
8	विश्व के विविध धर्म	संपादक मंडल- प्रो पी श्रीराम मूर्ति , प्रो. प्रेमकली शर्मा, डॉ. उर्मिला आनंद	दयालबाग़ एजुकेशनल इस्टीट्यूट दयालबाग़ , दयालबाग़ आगरा - 282005 (सप्तम संस्करण -2013)

9	भारतीय संगीतशास्त्र ग्रन्थपराम्परा : एक अध्ययन	डॉ. लिपिका दासगुप्ता, डॉ. स्वतंत्र शर्मा व अन्य	प्रेस एंड पब्लिकेशन सेल्ल , काशी हिन्दू विश्वविद्यालय। वाराणसी - 221005
10	सौन्दर्य रास एवं संगीत	प्रो. स्वतंत्र शर्मा	प्रतिभा प्रकाशन , 29/5 शक्तिनगर दिल्ली - 110055
11	बारहमासा	संगीत विभाग व हिंदी विभाग , कला संकाय , दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टिट्यूट	अप्रकाशित
12	The Sound of the sacred: Religious Music in India	Selena Thelamann	-
13	Discourses on Radhasoami Faith	Param Gurur Maharaj Sahab (Pandit Brahm Shankar Mishra), M.A.	Radhasoami Satsang Sabha (Agra)-(2009)

पत्र-पत्रिकाएँ

क्रम संख्या	**पत्रिका का नाम एवं अंक**	**प्रकाशन**
1	संगीत (गुरमति संगीत अंक) जनवरी- फरवरी -1997	संगीत कार्यालय हाथरस 2401101 (उ. प्र.)